IJAER/ Aug-Sep 2012 /Volume-1/Issue-2 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक राजनीति में सामाजिक मीडिया का निर्माण

डॉ बाबू लाल मीणा

व्याख्याता.राज. विज्ञान

राजकीय कन्या महाविद्यालय .अजमेर

सार

सोशल मीडिया का प्रयोग वर्तमान में तेजी से बढ़रहा है और इसके साथ ही इसका प्रभाव बढ़रहा है। सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं में तेजी से हो रहा है। संपर्क के साधन के साथ राजनीति, अर्थव्यवस्था और अन्य क्षेत्रों में इसके उपयोग में तेजी आ रही है। इसके कारण यह समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है विशेषकर युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ यह युवाओं की जीवनशैली और विचारों को प्रभावित कर रहा है। युवा सोशल मीडिया पर अपनी निजी जिंदगी खोलने लगा है साथ ही अन्य अप्रमाणित खबरों को वह सच मानने लगा है। जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी उभर रहा है।

मुख्य शब्द : *युवा, सोशल मीडिया, नैतिक मूल्य,*

प्रस्तावना

समाज में मीडिया की भूमिका

लोकतांत्रिक देशों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिये मीडिया को ''चौथे स्तंभ'' के रूप में जाना जाता है। 18वीं शताब्दी के बाद से, खासकर अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ्राँसीसी क्रांति के समय से जनता तक पहुँचने और उसे जागरूक कर सक्षम बनाने में मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करें तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। अगर हम देखें कि समाज किसे कहते हैं तो यह तथ्य सामने आता है कि लोगों की भीड़ या असंबंद्घ मनुष्य को हम समाज नहीं कह सकते हैं। समाज का अर्थ होता है संबंधों का परस्पर ताना–बाना, जिसमें विवेकवान और विचारशील मनुष्यों वाले समुदायों का अस्तित्व होता है।

मीडिया एक समग्र तंत्र है जिसमें प्रिंटिंग प्रेस, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, रेडियों, सिनेमा, इंटरनेट आदि सूचना के माध्यम सम्मिलित होते हैं। अगर समाज में मीडिया की भूमिका की बात करें तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में मीडिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है एवं उसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के दौरान समाज पर उसका क्या सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

प्रभाव पर गौर करने पर स्पष्ट होता है कि मीडिया की समाज में शक्ति, महत्ता एवं उपयोगिकता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभावों में काफी अभिवृद्धि हुई है लेकिन साथ–साथ इसके नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आए हैं।

मीडिया ने जहाँ जनता को निर्भीकता पूर्वक जागरूक करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने, सत्ता पर तार्किक नियंत्रण एवं जनहित कार्यों की अभिवृद्धि में योगदान दिया है, वहीं लालच, भय, द्वेष, स्पर्द्धा, दुर्भावना एवं राजनैतिक कुचक्र के जाल में फंसकर अपनी भूमिका को कलंकित भी किया है। व्यक्तिगत या संस्थागत निहित स्वार्थों के लिये यलो जर्नलिज़्म को अपनाना, ब्लैकमेल द्वारा दूसरों का शोषण करना, चटपटी खबरों को तवज्जों देना और खबरों को तोड़–मरोड़कर पेश करना, दंगे भड़काने वाली खबरे प्रकाशित करना, घटनाओं एवं कथनों को द्विअर्थी रूप प्रदान करना, भय या लालच में सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना, अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और महिमामंडन करना और किसी दूसरे की आलोचना करना जैसे अनेक अनुचित कार्य आजकल मीडिया द्वारा किये जा रहे हैं। दुर्घटना एवं संवेदनशील मुद्दों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करना, ईमानदारी, नैतिकता, कर्त्तव्यनिष्ठा और साहस से' संबंधित खबरों को नजरअंदाज करना आजकल मीडिया का एक सामान्य लक्षण हो गया है। मीडिया के इस व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और असंतुलन की स्थिति पैदा होती है।

प्रिंट मीडिया और टी.वी. एवं सिनेमा के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति का आगमन और प्रसार हो रहा है जिससे समाज में अनावश्यक फैशन, अश्लीलता, चोरी, गुंडागर्दी जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है। इस पतन के कारण युवा पीढ़ी भी पतन के गर्त में धँसती जा रही है।

इंटरनेट के माध्यम से असामाजिक क्रियाकलाप युवाओं तक पहुंच रहे है जिससे उनमें नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की लगातार कमी आती जा रही है। इन सबको देखते हुए मीडिया की भूमिका पर चर्चा करना आज आवश्यक हो गया है।

मीडिया की भूमिका यथार्थ सूचना प्रदायक एजेंसी के रूप में होनी चाहिये। मीडिया द्वारा समाज को संपूर्ण विश्व में होने वाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसलिये मीडिया का यह प्रयास होना चाहिये कि ये जानकारियाँ यथार्थपरक हो। सूचनाओं को तोड़–मरोड़कर या दूषित कर प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं होना चाहिये। समाज के हित एवं जानकारी के लिये सूचनाओं को यथावत एवं विशुद्ध रूप में जनता के समक्ष पेश करना चाहिये। मीडिया का प्रस्तुतीकरण ऐसा होना चाहिये जो समाज का मार्गदर्शन कर सके। खबरों और घटनाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हो जिससे जनता का मागदर्शन हो सके। उत्तम लेख, संपादकीय, ज्ञानवद्र्धक सूचनाएँ, श्रेष्ठ मनोरंजन आदि सामग्रियों का खबरों में समावेशन होना चाहिये तभी समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकेगी।

मीडिया समाज को अनेक प्रकार से नेतृत्व प्रदान करता है। इससे समाज की विचारधारा प्रभावित होती है। मीडिया को प्रेरक की भूमिका में भी उपस्थित होना चाहिये जिससे समाज एवं सरकारों को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त हो। मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है। वह समाज की नीति, परंपराओं, मान्यताओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति के प्रहरी के रूप में भी भूमिका निभाता है। पूरे विश्व में घटित विभिन्न घटनाओं की जानकारी समाज के विभिन्न वर्गों को मीडिया के माध्यम से ही मिलती है। अत: उसे सूचनाएँ निष्पक्ष रूप से सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करनी चाहिये।

मीडिया अपनी खबरों द्वारा समाज के असंतुलन एवं संतुलन में भी बड़ी भूमिका निभाता है। मीडिया अपनी भूमिका द्वारा समाज में शांति, सौहार्द, समरसता और सौजन्य की भावना विकसित कर सकता है। सामाजिक तनाव, संघर्ष, मतभेद, युद्ध एवं दंगों के समय मीडिया को बहुत ही संयमित तरीके से कार्य करना चाहिये। राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं एकता की भावना को उभरने में भी मीडिया की अहम भूमिका होती है। शहीदों के सम्मान में प्रेरक उत्साहवर्द्धक खबरों के प्रसारण में मीडिया को बढ़–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिये। मीडिया विभिन्न सामाजिक कार्यों द्वारा समाज सेवक की

भूमिका भी निभा सकता है। भूकंप, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक या मानवकृत आपदाओं के समय जनसहयोग उपलब्ध कराकर मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। मीडिया को सद्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन हेतु भी आगे आना चाहिये।

मीडिया की बहुआयामी भूमिका को देखते हुए कहा जा सकता है कि मीडिया आज विनाशक एवं हितैषी दोनों भूमिकाओं में सामने आया है। अब समय आ गया है कि मीडिया अपनी शक्ति का सदुपयोग जनहित में करे और समाज का मागदर्शन करे ताकि वह भविष्य में भस्मासुर न बन सके।

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे–फेसबुक, ट्विटर, लिंकर, यू–ट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस, साउंडक्लाउड और ऐसे ही अन्य साइटों पर इस्तेमाल कर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोगकरनेतथाटेक्स्ट,इमेज,ऑडियोऔरविडियोंरूपोंमेंजानकारीमेंहिस्सेदारीकरनेऔरउसे परिष्कृतकरनेकीयोग्यता औरसुविधाप्रदानकरताहै।यहसचहैकिसोशलमीडियानेइंटरनेटका लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शो को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को भी जन्म दिया है जो घात लगाए रहते हैऔर लगता है किउनकी संख्या बढ़ रहीहै। हाथ में रखे जाने वाले मोबाइल

उपकरणों जैसे–स्मॉर्टफोन औरटैबलेट्सकीसंख्यातेजीसेबढतीजारही है औरइनउपकरणों पर इंटरनेटकीउपलधतासे वास्तविकसमाजीकरणमेंतात्कालिताकीभावनाकईगुणाबढ गईहै।इसके जरिएनकेवलअतिसंवेदनशीलऔरयुवादिलोंकोप्रभावितकरनेवालीअनुचितसामग्रीआसानीसे उपलब्ध हो जाती है, बल्कि निंदनीय मानसिकता वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार के जघन्य प्रयोजनों के लिएइसमाध्यमकाप्रयोगकरनेकीछूटभीमिलजातीहै।साइबरबुलिंग,साइबरस्टॉकिंग,अफवाहें फैलाना जैसे दुष्कर्म इस भयावह दैत्य के मामूली नमूने है।

सोशल मीडिया ने इस्तेमालकर्त्ता–जनित सामग्री के जरिए सार्वजनिक जीवन के जाने–माने व्यक्तियों कीप्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचायाहै, निजता,कॉपीराइट औरअन्यमानवाधिकार कानूनों काअतिक्रमण किया है। इन सभी बातों के बावजूद इस अद्भुत माध्यम के विकास में कोई रूकावट नहीं आई, जिसने न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में परंपरागत मीडिया का स्थान लेने और उसे मार्ग से हटाने का खतरा पैदाकरदियाहै।सोशलमीडियाकीअक्सरयहकहकरआलोचनाकीजातीहैकिइसनेलोगोंके व्यक्तिगत रूप से मिलने की प्रवृत्ति पर विपरीत असर डाला है, जहां परंपरागत ढंग से एक–दूसरे से मिलने औरबातचीतकरनेकासमयकिसीकेपासनहींहै,लेकिनइसकेबावजूदडिजिटलस्पेससामाजिक नेटवर्किंग के नित नए आयाम और आकर्षण उपलब्ध करा रहा है।

सामाजिकनेटवर्किंगऔरसोशलमीडियाकेविकासकेप्रमुखसंचालकोंमेंसेएकहै,मोबाइल टेलीफोनी। ए.सी.नेल्सन की द सोशल मीडिया रिपोर्ट (2012) में कहा गया था कि सोशल मीडिया तक पहुंच कायमकरनेकेलिएअधिकाधिकलोगस्मार्टफोनोंऔरटेबलेट्सकाइस्तेमालकररहेहैं।अधिक कनेक्टिविटी के साथ उपभोक्ताओं को सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने की अधिक आजादी मिल रही है और वे जहां कहीं और जब चाहे सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट एंड मोबाइल ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों में सोशल मीडिया के प्रयोक्ताओं की संख्या जुलाई 2012 तक 6.2 करोड पर पहुंच चुकी थी। शहरी भारत में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं।

इस रिपोर्ट के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है –

- मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करते हुए सोशल नेटवर्किंग ऐक्सेस की औसत आवृति एक सप्ताह में सात दिन।

- फेसबुक को भारत में 97 प्रतिशत सोशल मीडिया प्रयोक्ताओं द्वारा ऐक्सेस किया जाता है।
- भारतीय सोशल मीडिया पर हर रोज औसत लगभग 30 मिनट व्यतीत करते है। इन इस्तेमाल कर्ताओं में अधिकतम युवा (84 प्रतिशत) और कॉलेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) है।

सस्ते मोबाइल हैंडसेट आसानी से उपलब्ध होने के कारण यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इंटरनेट का इस्तेमाल और नतीजतन सोशल मीडिया नेटवर्किंग के इस्तेमाल में भारत में आने वाले कुछ वर्षों में जबरदस्त बढोतरी होगी। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि आज यह देखा जा रहा है कि मोबाइल फोन के जरिए सोशल नेटवर्किंग के इस्तेमाल में निरंतर बढोतरी हो रही है। मोबाइल फोन का प्रसार अत्यंत तीव्रगतिसेहोरहाहैऔरज्यादासेज्यादासंख्यामेंलोगऐसेफोनअपनारहेहैजिनमेंअनेक विशिष्टताएं होती है अथवा स्मार्ट फोनों की संख्या लोगों के पास बढती जा रहीहै। जो इंटरनेट ऐक्सेस प्रदान करने वाले होते है, जिससे सोशल नेटवर्किंग साइट्स भारत में सक्रिय इंटरनेट प्रयोक्ताओं के आधार का तेजी से प्रसार कर रही है। मोबाइल इंटरनेट सस्ता होने के कारण भी इसमें वृद्धि हो रही है।

सोशल मीडिया की बादशाहत पूरे समाज के सिर चढ़कर बोल रही है। हर आयु वर्ग के लोग इसकी गिरफ्त में हैं। यह लोगों को हंसाने के साथ रुलाने भी लगी है। अब तो नाबालिग भी इसकी गिरफ्त में आ चुकेहैं,जोसमाजकेलिएशुभसंकेतनहींहै।सोशलमीडियाकेहीअंगफेसबुकनेदोवर्षपहले पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के काठमांडू से गायब भाई को फेसबुक के जरिए भारत में मिला दिया। अगस्त 2012 में काठमांडू से रहस्यमय हालात में गायब 25 वर्षीय सुमित झा को दो नवंबर 14 को फेस बुक ने परिवार से मिलाया था। बड़े भाई 27 वर्षीय अमित झा ने बताया था कि छोटे भाई के गायब होने के बाद बहुत ढूंढा पर जब वह नहीं मिला तो एक वर्ष पहले फेसबुक पर उसकी फोटो डाली। इसका सार्थक परिणाम निकला और फेसबुकपरफोटोडालनेकेएकवर्षकेबादहमाराछोटाभाईहमेंमिलगया। यह रहा सोशल मीडिया का सकारात्मक पहलू। इसकेनकारात्मकपहलूपरजागरणनेसमाजशास्त्रियोंवमनोवैज्ञानिकोंसेबातकी।प्रस्तुतहैउनके विचार –

डा.अभिमन्युसिंहनेकहाकिसोशलमीडियाकाउपयोगसभीकोकरनाचाहिएपरइसकी मानीटोरग भी होनी चाहिए। इसके उपयोग के लिए समय का निर्धारण होना चाहिए। क्योंकि इस पर अच्छीके साथ ही खराब जानकारियां भी उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया पर अच्छीव सŭची जानकारीडाली जानी चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

1० आधुनिक राजनीति में सामाजिक मीडियाका अध्ययन

2० राजनीति, अर्थव्यवस्था और अन्य क्षेत्रों का अध्ययन

युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दुष्परिणाम

वर्तमान समय में सोशल मीडिया के प्रयोग ने युवाओं को समय से पहले आक्रांत कर दिया है। युवा तुरंत पहचान बनाना चाहता है। बिना इंतजार किए प्रतिष्ठित होना चाहता है, और जब चाह नहीं पूरी होती तो वे आक्रामक व आपराधिक कार्यों को करने से नहीं डरते।

नकारात्मक प्रवृत्ति पर रोक जरूरी

सोशल मीडियाकेफायदेतोबहुत हैं,पर इसनेयुवाओं को दिग्भ्रमित भी खूब किया है।इस पर धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले बयान नहीं आने चाहिए। अश्लील वीडियो पर पाबंदी होनी चाहिएऔर इस पर प्रभावी अंकुश के लिए कठोर कानून बनाकर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

अच्छीचीजें परोसने से रुकेगी आपराधिक प्रवृत्ति

डा. प्रज्ञेश कुमार मिश्र (2008) ने कहा कि सोशल मीडिया पर अच्छी जानकारियों व चीजें परोसने सेयुवाओं में आपराधिक प्रवृत्ति रुकेगी और सोशल मीडिया का साइड इफेक्ट नहीं पड़ेगा। दरअसल मानव की प्रवृत्ति अनुकरणात्मक होती है। समाज में जैसा परोसा जाएगा वैसा ही लोग अनुसरण करेंगे।

आज का दौर अगर सही मायने में देखें तो युवाशक्ति का दौर है। भारत में इस समय 65 प्रतिशत के करीब युवा हैं जो किसी और देश में नहीं हैं और इन युवाओं को जोडने़ का काम सोशल मीडिया कर रहा है। युवा वर्ग के लोगों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का क्रेज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनिया भर में इंटरनेट पर होने वाली नंबर वन गतिविधि बन गया है। एक परिभाषा के अनुसार, 'सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा अत्यधिक गतिशील मंच कहा जा सकताहैजिसकेमाध्यमसेलोगसंवादकरतेहैं,आपसीजानकारियोंकाआदान–प्रदानकरतेहैंऔर उपयोगकर्ताजनितसामग्रीको सामग्रीसृजनकीसहयोगात्मकप्रक्रियाकेएकअंशकेरूपमेंसंशोधित करते हैं।' सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं की जिंदगी का एक अहम अंग बन गया है। इसके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रोक–टोक के देश और दुनिया के हर कोने तक पहुंचा सकते हैं।

युवाओं के जीवन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अगर इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों की माने तो भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करता है। इसी रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों केआंकड़ों केआधारपर यहभीबतायागयाकि77प्रतिशतउपयोगकर्तासोशलमीडियाकाइस्तेमाल मोबाइल से करते हैं। सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने में मोबाइल का बहुत बड़ा योगदान है और इसमें भी युवाओं की भूमिका प्रमुख है। भारत में 25 साल से अधिक आयु की आबादी 50 प्रतिशतऔर 35 साल से कम आयु की 65 प्रतिशत है। इससे देखते हुए आंकड़े बताते हैं कि भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन करीब 30 मिनट समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जा रहाहै। इनमें अधिकतम कालेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) और युवा (84 प्रतिशत) पीढ़ी के लोग शामिल हैं। सोशल साइट्स ने स्कूली दिनों के साथियों से मिलवाया तो आज देश–दुनिया के कोने में रहने वाले मित्र भी एक–दूसरे को फेसबुक पर ढूंढ़ रहे हैं। सोशल मीडिया के द्वारा जिनसे वास्तविक जीवन में मुलाकातें भले ही न पाये पर सोशल साइट्स पर हमेशा जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया की सफलता इससे भी देखी जा सकती है कि परंपरागत मीडिया भी अबफेसबुकवट्विटरजैसेमाध्यमोंपरनसिर्फअपनेपेजबनाकरउपस्थितिदर्जकरारहीहै,बल्कि विभिन्न मुददों पर लोगों द्वारा व्यक्त की गयी राय को इस्तेमाल भी कर रही है।

भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में सोशल मीडिया ने सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं बल्कि कई सामाजिक व गैर–सरकारी संगठन भी अपने अभियानों को मजबूती दी है। सोशल मीडिया सिर्फ अपना चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं रह गया है। जिन देशों में लोकतत्र का गलाघोंटा जा रहा है वहां अपनी बात कहने के लिए लोगों ने सोशल मीडिया का लोकतंत्रीकरण भी किया है। हाल के वर्षों में अरब जगत में हुई क्रांतियों में सोशल मीडिया ने महत्पूर्ण भूमिका अदा की है।

युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत ही गहन है। ये वो वर्ग है जो सबसे ज्यादा सपने देखता है और उन सपनों को पूरा करने के लिए जी–जान लगाता है। युवा और सोशल मीडिया एक दूसरे से जुड़ गए हैं। जहां एक तरफ सोशल मीडिया युवाओं के सपनों को एक नयी दिशा दे रही है वही दूसरी ओर युवा वर्ग अपने सपनों को साकार करने के लिए इस माध्यम का उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट से लेकर थ्री–जी मोबाइलतकयुवासोशलमीडियाकेमाध्यमसेदेश–दुनियाकीसरहदोंकोपारकरअपनेसपनोंकी उड़ान कर रहे हैं। ब्लॉगिंग के जरिए जहां ये युवा अपनी समझ, ज्ञान और भड़ास निकालने का काम कर

रहेहैं ।वहींसोशलमीडियासाइट्सकेजरिएदुनियाभरमेंअपनीसमानमानसिकतावालोंलोगोंको जोड़कर सामाजिक सरोकार–दायित्व को पूरी तन्मयता से पूरी कर रहे हैं।

लेकिन इसका एक नकारात्मक पहलू भी है। युवाओं को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का नशा सा हो गया है। सोशल वेबसाइट पर दिन में कई बार स्टेट्स अपडेट करना, घंटों तक मित्रों के साथ चौटिंग करना जैसी आदतों ने युवा पीढ़ी को काफी हद तक प्रभावित किया है। घंटों तक फेसबुक व ट्वीटर जैसी वेबसाइट्स पर समय बिताने से न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है बल्कि धीरे–धीरे कुछ नया करने की रचनात्मकता भी खत्म हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से तमाम अश्लील सामग्री और भड़काऊ बातें भी लोगों तक प्रसारित की जा रही है, जोकि लोगों के मनोमस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती है और जिनकी वजह से देश में दंगा फसाद में वृदि हुई है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने लोगों को वास्तविक जीवन को भूलाकर आभासी जीवन में रहने को मजबूर कर दिया है। सोशल साइट्स की आदत के कारण

युवाओं में व्यक्तिगत संवाद की दिक्कत होती है, जिससे वे सामाजिक रूप से प्रभावी संवाद नहीं कर पाते हैं। इसके परिणाम स्वरुप आज के युवा पड़ी में धैर्य की भारी कमी देखी जा सकती है। युवावस्था एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति को अपने उपदेश के बारे में नहीं पता होता और उसके कारण उससे गलत संगति में पडने में जरा सा भी समय नहीं लगता। सोशल मीडिया के द्वारा युवाओं को पश्चिमी सभ्यता का अंधाधुंध अनुसरण करना आधुनिकता का मापदान लगने लगा है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया से हमारे देश के युवाओं की पूरी जीवन–शैली प्रभावित दिखलाई पड़ रही है जिसमेंरहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और बोलचाल सभी समग्र रूप से शामिल हैं। मद्यपान और धूम्रपान उन्हेंएक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से है। आपसी रिश्ते–नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुखदायी परिणाम हैं।

आजदेशकेसामनेसबसेबड़ायक्षप्रश्नयहहैकियुवाशक्तिकासदुपयोगकैसेकरें ।इसका जवाबसोशलमीडियामेंहीछुपाहै ।अगरहमारेदेशकायुवाचाहेतोसोशलमीडियाकेद्वाराअपने आपको एक अच्छा व्यक्ति बना सकता है। यहां वे अपनी अच्छाईयों व रचनात्मकता से रूबरू करा सकते हैं। सूचना के आदान–प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोडने, भागीदार बनाने और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि नये ढंग से संपर्क करने में युवा अपना हाथ बंटा सकता है और सोशल मीडिया को एक सशक्त और बेजोड़ उपकरण के रूप में तैयार कर सकता है।

संदर्भ:

1ण कार्टर, आर., (2002) अनुप्रयुक्त भाषाई परिप्रेक्ष्य। शब्दावलीरू शब्दावली। तीसरा। ईडी। लंदनरू टेलर और फ्रांसी

2ण डाउन्स, जेएम, और बिशप, पी। (2012)। शिक्षक डिजिटल नेटिव से जुड़ते हैं और प्रौद्योगिकी के साथ अपने अनुभवों से सीखते हैंरू प्रौद्योगिकी का एकीकरण छात्रों को उनके सीखने में संलग्न करता है। मिडिल स्कूल जर्नल, 43(5), 6–15।

3ण एवलैंड जूनियर, डब्ल्यू.पी., और शेफेल, डी.ए. (2000)। ज्ञान और भागीदारी में अंतराल के साथ समाचार मीडिया के उपयोग को जोड़ना। राजनीतिक संचार, 17(3), 215–237।

4ण फ्राइल, एम।, और अयंगर, एस। (2014)। सभी समाचार स्रोत समान रूप से सूचनात्मक नहीं हैंरू यूरोप में राजनीतिक ज्ञान का एक क्रॉस–नेशनल विश्लेषण। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रेस/पॉलिटिक्स, 19(3), 275–294।

5ण हीनोनेन, के. (2011)। सोशल मीडिया में उपभोक्ता गतिविधिरू उपभोक्ताओं के सोशल मीडिया व्यवहार के लिए प्रबंधकीय दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ कंज्यूमर बिहेवियर, 10(6), 356–364।

6ण क्रेटज़र, टी। (2009)। जनरेशन मोबाइलरू दक्षिण अफ्रीका में कम आय वाले शहरी युवाओं के बीच मोबाइल फोन पर ऑनलाइन और डिजिटल मीडिया का उपयोग। मार्च, 30(2009), 903–920 को पुनःप्राप्त।

7ण क्रिजनेन, टी., और मीजेर, आई.सी. (2005)। प्राइमटाइम टेलीविजन में नैतिक कल्पना। सांस्कृतिक अध्ययन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 8(3), 353–374।